विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2562, श्रावण पूर्णिमा 26 अगस्त, 2018, वर्ष 48, अंक 2

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

अकतं दुक्कटं सेय्यो, पच्छा तप्पति दुक्कटं।
कतञ्च सुकतं सेय्यो, यं कत्वा नानुतप्पति।।

धम्मपद-314, निरयवग्गो.

दुष्कृत (बुरे काम) का न करना श्रेयस्कर है (क्योंकि) दुष्कृत करने वाला पीछे अनुताप करता है; और सुकृत (अच्छे काम) का करना श्रेयस्कर है जिसे करके (पीछे) अनुताप नहीं करना पड़ता।

वि. साधना की स्वर्ण जयंती पर धर्म-प्रसार एवं पूज्य गुरुजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का सुअवसर

3 जुलाई, 1969 को विपश्यना साधना का पहला शिविर मुंबई की पंचायतीवाडी धर्मशाला में लगा। इस प्रकार भारत में इसके पुनरुत्थान की 50वीं वर्षगांठ, यानी, 3 जुलाई 2018 से 2 जुलाई 2019 तक पूरे वर्ष भर स्वर्ण जयंती समारोह मनाने का संकल्प है, ताकि यह वर्ष साधकों की दैनिक साधना पुष्ट करने में सहायक हो। इसके लिए पूरे वर्ष भर ग्लोबल विपश्यना पगोडा में प्रतिदिन एक दिवसीय शिविर नियमित रूप से चलते रहेंगे। जिस किसी साधक-साधिका को जिस दिन भी समय मिले, इन शिविरों का लाभ उठा सकते हैं। इससे साधकों की साधना में निरंतरता और नियमितता आयेगी और उनसे प्रेरणा पाकर अधिक से अधिक लोगों में सद्धर्म के प्रति जागरूकता पैदा होगी और वे भी शिविरों में सम्मिलित होकर अपना कल्याण साध सकेंगे। अन्य स्थानों पर भी लोग इसी प्रकार दैनिक साधना, सामूहिक साधना तथा एक दिवसीय शिविरों द्वारा इसके व्यावहारिक अभ्यास को पुष्ट करके ही समारोह मनायें, यही पूज्य गुरुदेव के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि और सही कृतज्ञता होगी।

विश्व विपश्यनाचार्य पूज्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी के संक्षिप्त जीवन-परिचय की ... **दूसरी कड़ी**:--

... मास्टर कल्याणदत्त दुबेजी ने सचमुच कल्याण किया। रहीम और तुलसी की अध्यात्म रचनाओं ने बाल मानस को जिस प्रकार धर्म की ओर उन्मुख किया वह जीवन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ।

कुछ घटनाएं

स्कूल के समय की एक घटना। देश के सुप्रीम कोर्ट के जज श्री जीजीभाई के प्रयास से ७वीं कक्षा में सरकार की ओर से फर्स्ट-एड (First-Aid) का पाठ पढ़ाया गया। उस समय हमें पढ़ने के लिए जो पुस्तक दी गयी, उससे बड़ी पुस्तक मैं बाजार से खरीद लाया, क्योंकि नई-नई पुस्तकें पढ़ने का शौक मुझे बचपन से ही था। पिताजी ने किताब खरीदने की पूरी सहूलियत दे रखी थी। इसे देख करके परीक्षक डॉक्टर बहुत प्रसन्न हुए। मैंने परीक्षा में उनके हर प्रश्न का पूरे से भी अधिक और सही उत्तर दिया और पूरे म्यंमा में प्रथम आया। डॉक्टर ने अपनी टिप्पणी में लिखा कि यह लड़का सबसे अधिक तेज है। उनके कहने पर म्यंमा के तत्कालीन ब्रिटिश गवर्नर क्रोक्रीन ने एक बड़ी सभा में मुझे स्वर्णपदक (Gold Medal) प्रदान किया। इस सब के पीछे बुआ की प्रथम शिक्षा ही बलदायी रही।

प्रथम शिक्षा-प्रदायिनी उस धर्ममयी गुरुमाता बुआ की प्रताड़ना और कासू

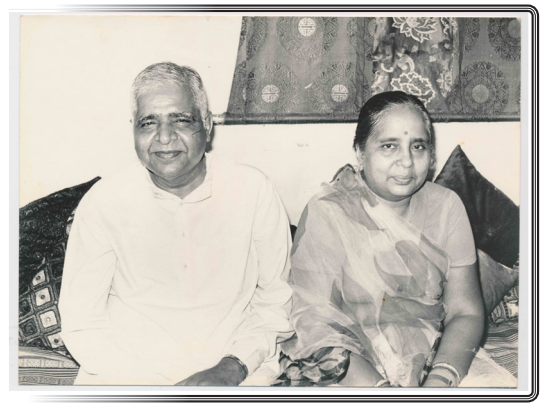

पूज्य श्री गोयन्काजी एवं पूज्य माताजी अपने निवास में बैठे हुए.

गुरुजी तथा अन्य गुरुओं की कृपा का ही फल था कि मैं हर कक्षा में प्रथम आता रहा। मेरे सभी गुरु मुझ पर विशेष रूप से प्रसन्न रहे। बुआ मां को जब-जब याद करता हूं, मन में प्रणाम के ही भाव जागते हैं। उसने मुझे गुरुओं के प्रति जो सम्मान का पाठ पढ़ाया, उसे मैं जीवन भर नहीं भूल सका। यह प्रण मैंने जीवन भर निभाया- "किसी गुरु की निंदा कभी नहीं करनी।"'

इसका एक उदाहरण--

खालसा स्कूल के सभी अध्यापक सरदार थे। वे बहुत भले थे। सभी एक से बढ़ कर एक। प्रमुख अध्यापक (हेडमास्टर) का तो कहना ही क्या। सफेद लंबी दाढ़ी के कारण वे देखने में बहुत भव्य लगते थे। परंतु एक घटना ऐसी घटी, जिससे थोड़ी कड़वाहट आ गयी। स्कूल का नियम था कि कोई बच्चा होली खेल कर स्कूल में न आये। परंतु होली का दिन था, इसलिए रास्ते में एक दुष्ट बच्चे ने और कुछ नहीं तो फाउंटेन पेन की स्याही मेरे ऊपर छिड़क दी। हम स्कूल गये तो मास्टर जी बहुत नाराज हुए। जो होली से रंगे कपड़े पहन कर आये थे, उन्हें बांस के डंडे से पीटा। मेरी बारी आयी। मैं जानता था कि इसमें मेरा कोई कसूर नहीं था। लेकिन क्या करता? बांस का एक डंडा मुझे भी लगा। इसका दु:ख हुआ। दूसरे दिन जब मास्टरजी को सच्चाई बतायी और यह भी कि मेरे मन में उनके प्रति जो दुर्भावना आयी, उसके लिए माफी चाहता हूं। इससे वे बहुत खुश हुए और मेरे प्रति उनका स्नेह पहले से भी अधिक हो गया। ऐसे समय कासू गुरुजी और बुआ की बहुत याद आयी।

खालसा स्कूल के सभी मास्टर सरदार थे, केवल एक श्री हरवंसरायजी पंजाबी मास्टर थे। वे भी सभी गुरुओं की तरह बहुत खुशमिजाज थे परंतु बार-बार यह कहते कि मारवाड़ी समाज में बहुत दोष आ गये हैं, उन्हें

तुम्हें निकालना होगा। उन्होंने मुझे 'चांद' नामक पत्रिका के वार्षिक अंक की एक प्रति पकड़ाई, जिसमें मारवाड़ी समाज की खिल्लियां उड़ाई गयी थीं।

मैंने प्रतिज्ञा की कि ये दूषण मैं अवश्य दूर करूंगा। मास्टरजी बहुत प्रसन्न हुए। वे सचमुच पक्के मास्टरजी थे। अन्य गुरुओं से भी यही सीख पायी कि समाज में जो दूषण आ गये हैं उन्हें दूर करना ही चाहिए। मैंने अच्छा काम करने का बीड़ा उठाया। समाज के दूषण दूर करने में अग्र बना।

इन्हीं दिनों आर्य समाज से मेरा घनिष्ठ संबंध हो गया । आर्य समाज के पंडित श्री मंगलदेव शास्त्री बहुत भले थे। उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। समाज सुधार के काम में उनका बहुत बड़ा योगदान था।

मैट्रिक की पढ़ाई

कासू गुरुजी ने हमें एक, डेढ़ के बाद ढाई और साढ़े तीन गुणा के पहाड़ों की जो रट सिखा दी थी, वह मेरे लिए सारी पढ़ाई में बहुत काम आयी। मैट्रिक स्कूल के बूढ़े मास्टर बड़े भावुक थे। मैं स्कूल की हर परीक्षा में प्रथम आता था इसलिए उनका मुझ पर विशेष स्नेह था । एक दिन मैं उनसे मिला। उन्होंने मेरे सिर पर हाथ फेरा और आशीर्वाद दिया । मैंने अपनी समस्या उनके सामने रखी कि मैं मैट्रिक की परीक्षा देना चाहता हूं लेकिन मेरे घर वाले मुझे केवल दो वर्ष तक ही पढ़ने की अनुमति दे रहे हैं।

मेरे बड़े भाई बाबूलाल ने ७वीं कक्षा के बाद पढ़ाई बंद कर दी है। इसलिए एक ही रास्ता है कि मुझे ७वीं के बाद डबल प्रमोशन मिले यानी मैं ८वीं छोड़ कर सीधे ९वीं कक्षा में बैठूं। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि इसके बावजूद मैं ९वीं में प्रथम ही आऊंगा। स्कूल के एक मास्टर श्री कर्णसिंह ने मुझे दो महीने तक ट्यूशन देने का वादा किया। हेडमास्टर पहले ही तैयार थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि यह लड़का अच्छा ही करेगा। अत: बड़े गुरुजी ने डबल प्रमोशन दे दिया और मैं उन सब की आशाओं पर खरा उतरा ।

कासू गुरुजी की शिक्षा के कारण ही नौवीं कक्षा में, और फिर बोर्ड की सरकारी परीक्षा दसवीं कक्षा में भी मैंने हिंदी एवं गणित में विशेष योग्यता प्राप्त की। दसवीं में पूरे म्यंमा में प्रथम आया। सरकार की ओर से सारी सुविधा प्रदान की गयी और वजीफा मिलने पर भी मैं मैट्रिक से आगे की पढ़ाई नहीं कर सका। यद्यपि पिताजी ने मुझे रंगून के कालेज में भरती किया लेकिन वहां के बड़े-बूढ़ों ने मेरी पढ़ाई का विरोध किया। उन्होंने पिताजी से कहा कि इस उम्र में ही यह पुरातन सामाजिक व्यवस्थाओं का विरोध करता है तो आगे और पढ़ कर न जाने क्या करेगा । पिताजी उनकी बातों में आ गये और रंगून के कालेज में मेरे केवल तीन दिन बीतते-बीतते मुझे मांडले वापस ले आये और पढ़ाई खत्म हो गयी। पिताजी ने कहा कि अब तुम पढ़ाई नहीं कर सकते। तुम्हें नौकरी तो करनी नहीं। एक व्यापारी के लिए मैट्रिक की पढ़ाई बहुत है। इससे अधिक पढ़ कर क्या करना? अब काम-धंधे में लग जाओ और उसके गुर सीखो । दूकान में बैठना होगा। मजबूरन मेरी कॉलेज की पढ़ाई बंद हो गयी। फिर भी मैंने हिंदी की पढ़ाई घर पर ही जारी रखी और प्राइवेट परीक्षाएं देता रहा ।

हिंदी का प्रचार-प्रसार

म्यंमा में हिंदी का प्रचार करने की एक धुन सवार हुई। हमने अखिल ब्रह्मदेशीय हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की और हिंदी प्रचार के कार्य में जुट गये। एक साप्ताहिक विद्यापीठ का आयोजन हुआ। मैंने एक रात्रि-पाठशाला में हिंदी पढ़ाना शुरू किया। भारत की नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा एवं हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग से संपर्क किया, पुस्तकें मँगवायी और उनकी पढ़ाई म्यंमा में करवा कर परीक्षाएं दिलवाता रहा । मैं स्वयं तो केवल मध्यमा तक ही पढ़ा था, परंतु कुछ विद्यार्थियों को सहयोग देकर उत्तमा तक की परीक्षा पास करवाई । समय बदला, म्यंमा में मिलिटरी शासन आ गया। उन्होंने बाहर से पुस्तकें मँगानी बंद कर दी। प्रयाग के हिंदी साहित्य सम्मेलन से हम संबद्ध हो चुके थे और उसकी 'प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा' तक की शिक्षा और परीक्षा का कार्य बहुत प्रभावशाली ढंग से पूर्ण किया जा रहा था। इसमें बहुत विद्यार्थी भाग लेते थे। परंतु प्रारंभिक हिंदी के लिए हमें कठिनाई उत्पन्न हुई, क्योंकि सभी सरकारी स्कूलों में हिंदी की पढ़ाई बंद कर दी गयी थी। अत: मैंने अपने कुछ साथियों के साथ मिल कर चौथी कक्षा तक की पाठ्य-पुस्तकें तैयार कीं और उन्हें म्यंमा में ही छपवा कर पढ़ाना आरंभ किया। इनमें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की पुस्तकें प्रमुख थीं। परंतु उनकी अनुमति के बिना कोई पाठ्य-पुस्तक मान्य नहीं हो सकती थी। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के विशिष्ट कार्यकर्ता भदंत आनन्द कौसल्यायनजी से मेरा अच्छा परिचय हो चुका था। वे जब-जब म्यंमा आते तो गोयन्का निवास में ही ठहरते। उनके सहयोग से इन पुस्तकों की स्वीकृति प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं हुई अर्थात हमने प्राइमरी की जो पुस्तकें छापी, उनकी अनुमति मिल गयी। इस प्रकार पुस्तकें आयात करने की समस्या हल हो गयी और हिंदी प्रचार का काम बेरोक-टोक चलता रहा।

भारत में ब्रिटिश सरकार ने क्रांतिकारी पुस्तकों का प्रकाशन बंद करवा दिया था। फिर भी मैंने भदंत आनन्दजी के माध्यम से ये पुस्तकें म्यंमा मँगवायी। इससे मेरे मन में हिंदी के साथ-साथ देश की क्रांतिकारी सेवा का भी पुरजोर जोश चढ़ा। उनमें श्री मन्मथनाथ गुप्त की लिखी हुई एक पुस्तक में भारतीय क्रांति का सांगोपांग वर्णन दिया हुआ था। इससे मुझे बड़ी प्रेरणा मिली। मेरी कविताओं में देशभक्ति की झलक पायी गयी। इस प्रकार म्यंमा में हिंदी का प्रचार आसानी से होता चला गया ।

कविता लेखन

कविता लिखने का शौक मुझे बचपन से ही था। म्यंमा रहते हुए कई विषयों पर कविताएं लिखीं और वहां के आयोजनों में कविता-पाठ किया।

मेरी कविताएं प्रमुख रूप से- साहित्यिक, देश-प्रेम, नेताओं के गुणगान, योगदान, पारिवारिक, त्योहारों आदि पर लिखी गयीं। इनमें से कुछ कविताएं म्यंमा में छपीं और कुछ आंशिक रूप से भारत की अन्य पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं में छपीं। इन कविताओं का संग्रह **'मेरी कविताएं'** नाम से पुस्तक रूप में छपा है। अनेक कविताओं के रचनाकाल की तिथियां भी अंकित हैं ।

हिंदी लेखन

हिंदी भाषा पर यथावश्यक अधिकार होने के कारण पंद्रह वर्ष की उम्र में, जब मैं नौंवी कक्षा में पढ़ता था, एक लेख लिखा जो कि रंगून से प्रकाशित होने वाली एक साप्ताहिक पत्रिका में छपा। मैं खुशियों से फूला नहीं समाया । और लोग भी यह देख लें कि मेरा लेख म्यंमा की एक प्रसिद्ध साप्ताहिक पत्रिका में छपा है, इस निमित्त मैं अपनी बेंच पर बैठा हुआ मेरे सामने की डेस्क पर पत्रिका का वह अंक खोले रखता था। खालसा स्कूल में कोई हिंदी के अध्यापक नहीं थे। उन्होंने एक नए अध्यापक को नियुक्त किया जो आर्य समाजी थे। उन्हें खड़ी बोली का पर्याप्त ज्ञान था परंतु उन्होंने सूर और तुलसी की रचनाएं कभी नहीं पढ़ी थीं, इसलिए वे अवधी और ब्रज भाषा से सर्वथा अनभिज्ञ थे । उन्हें मेरी कक्षा में हिंदी पढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया। 'माधुरी पद्य पारिजात' नामक हमारी पाठय पुस्तक में अवधी और ब्रज भाषा के अनेक पद थे । उन दिनों म्यंमा में मेरे पास हिंदी का एक शब्दकोश था, इसलिए कभी-

कभी किसी कठिन शब्द का अर्थ समझने के लिए वे मेरे शब्दकोश की सहायता लेते थे।

उस दिन मेरी डेस्क पर हिंदी की पत्रिका देख कर कहा कि पढ़ाई के समय पत्रिका क्यों ले कर बैठे हो? जब मैंने उन्हें उस पत्रिका में छपा मेरा लेख दिखाया तब पढ़ कर उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ कि ऐसी शुद्ध हिंदी में यह मेरा लिखा हुआ लेख है। उन्होंने मुझे एक विषय दिया और उस पर वहीं बैठे-बैठे दो पन्ने का लेख लिखने को कहा। मेरे लिखे हुए लेख से वे बहुत प्रभावित हुए। मैं उनका प्रिय शिष्य तो था ही, अब और अधिक प्रिय हो गया। कक्षा में अकेला मैं ही हिंदी का विद्यार्थी था और मास्टर प्यारेलाल ही अकेले हिंदी के अध्यापक थे।

कृष्ण के प्रति असीम श्रद्धा

मांडले (म्यंमा) में हमारे परिवार की थोक कपड़े की दूकान थी जहां अधिकतर जापान और इंगलैंड का बना हुआ कपड़ा ही बिकता था। परंतु महात्मा गांधी द्वारा स्वदेशी आंदोलन चलाये जाने पर मुंबई और अहमदाबाद की मिलों के कपड़े म्यंमा में आयात होने लगे और ये भी हमारी दूकान पर बिकने लगे। उन कपड़ों के थानों पर हमेशा कोई न कोई चित्र चिपका रहता था। उनमें अधिकतर देश के स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं के चित्र होते थे अथवा हमारे पूज्य देवी-देवताओं के। एक बार किसी कपड़े के थान पर मैंने अपने आराध्यदेव श्रीकृष्ण भगवान का बहुत ही सुंदर चित्र चिपका हुआ देखा। मैंने उसे बहुत प्यार और श्रद्धा से उतार लिया और किशोर अवस्था की जो भी बुद्धि थी उसके अनुसार उसके साइज का एक कार्डबोर्ड काट कर उस पर उसे चिपका दिया। चित्र खराब न हो जाय, इसलिए उस पर पारदर्शी प्लास्टिक की परत चिपका दी। उस चित्र का आकार इतना छोटा था कि वह मेरी कमीज की सामने वाली जेब में समा सकता था।

मुझे खूब याद है कि इस चित्र के प्रति मेरे मन में इतनी गहरी श्रद्धा और आसक्ति का भाव समाया हुआ था कि उस किशोर अवस्था से लेकर लगभग भावी 20 वर्षों तक मैं जो भी कमीज पहनता उसकी जेब में डाल कर हृदय से लगाये रखता था, भले मैं म्यंमा या भारत में रहता अथवा अन्य किसी देश की यात्रा पर। मन में यह प्रबल मान्यता थी कि मेरे जीवन की सभी सफलताएं इस परम ईश्वर की कृपा से ही प्राप्त हो रही हैं।

आगे चल कर हाईस्कूल की परीक्षा में मैं म्यंमा में उस वर्ष के सभी परीक्षार्थियों में सर्वप्रथम आया। मुझे सरकार की ओर से वजीफा मिला। मेरी मान्यता यही थी कि यह सब उस दयालु ईश्वर की कृपा से ही हुआ।

अठारह वर्ष की उम्र में जापानी युद्ध आरंभ होने पर मैं सारे परिवार का मुखिया होकर खतरनाक पहाड़ी रास्तों से पैदल चलता हुआ म्यंमा से भारत पहुँचा। आगे की यात्रा रेल में करते हुए परिवार सहित पुरुखों के नगर चूरू पहुँचा। वहां पहुँचते ही परिवार के सभी सदस्य बहुत बीमार पड़ गये। केवल मैं और मेरी भाभी (भाई बाबूलाल की धर्मपत्नी) नीरोग थे। अन्य सभी की हालत बहुत बुरी हो चुकी थी। हम दोनों रोगियों की सेवा में लग गये। उस समय मेरे नीरोग रहने को भी मैं उस महान ईश्वर की कृपा का ही फल मानता था। आगे जाकर दक्षिण भारत में व्यापार में लग जाने पर जो आशातीत सफलता मिली, उसे भी मैं अपने ईश्वर की ही देन मानता था।

जापानी युद्ध समाप्त होने पर जब पुनः म्यंमा गया तब व्यापारिक, सामाजिक और सरकारी सभी क्षेत्रों में जो विशिष्ट सफलताएं मिलीं, उन्हें भी मेरे कृपालु इष्टदेव की ही देन मानता था। सामाजिक क्षेत्र में न जाने कितनी संस्थाओं का अध्यक्ष बना। विशेषत: कुछ एक मित्रों के साथ "अखिल ब्रह्मदेशीय कांग्रेस" की स्थापना की और सारे म्यंमा में उसकी लगभग पचास शाखाएं खोलीं। इसी प्रकार "अखिल ब्रह्मदेशीय हिंदी साहित्य सम्मेलन" की स्थापना की और उसकी भी लगभग दस शाखाएं खोलीं। म्यंमा में हिंदी प्रचार के काम में पूरी तरह जुटा रहा। साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियों का संचालन करता रहा और साथ-साथ राष्ट्रीय विद्यापीठ की स्थापना करके हिंदी की ऊंची शिक्षा के पठन-पाठन के कार्य करता और करवाता रहा। "महात्मा गांधी स्मारक ट्रस्ट" की स्थापना की, जिसमें गांधीजी की आत्मकथा के साथ उनकी कुछ एक अन्य पुस्तकों का बरमी में अनुवाद करवाया। "ब्रह्मभारती कला केंद्र" की स्थापना की और रंगमंच का भी सफल संचालन किया।...

क्रमशः ...

विपश्यना की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर ग्लोबल विपश्यना पगोडा में एक-दिवसीय शिविरों के लिए पंजीकरण आवश्यक

एक दिवसीय शिविर **प्रतिदिन** प्रातः 11 बजे से सायं 5 बजे तक हुआ करेगा। जिन्होंने सयाजी ऊ बा खिन की परंपरा में, गुरुजी या उनके सहायक आचार्यों द्वारा सिखाया जाने वाला कम-से-कम एक 10-दिवसीय विपश्यना शिविर पूरा किया हो, वे सभी इनमें भाग ले सकते हैं। आवश्यक और उचित व्यवस्था करने के लिए प्रतिभागियों की संख्या जानना आवश्यक होगा। इसलिए, कृपया पंजीकरण अवश्य करायें। पंजीकरण बहुत आसान है बस 8291894644 पर WhatsApp संदेश Date लिख कर भेजें या SMS द्वारा 82918 94645 पर Date लिख कर भेज दें।

सब का मंगल हो!

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी **धातु-गब्भ** पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे सारा वातावरण दीर्घकाल तक धर्म एवं मैत्री-तरंगों से भरपूर रहता है। तदर्थ ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. 5000/- निर्धारित किये गये हैं। संपर्क- उपरोक्त (GVF) के पते पर...

अंशकालिक गैर आवासीय लघु पाठ्यक्रम विपश्यना ध्यान का परिचय (सैद्धांतिक रूप में)

विपश्यना विशोधन विन्यास और मुंबई यूनिवर्सिटी के संयुक्त आयोजन से नया लघु पाठ्यक्रम 'विपश्यना ध्यान का परिचय' शुरू होने जा रहा है, जो विपश्यना ध्यान के सैद्धांतिक पक्ष एवं विभिन्न क्षेत्रों में इसकी व्यावहारिक उपयोगिता को उजागर करेगा।

पाठ्यक्रम की अवधि : 2 अगस्त 2018 से 1 नवंबर 2018 (3 महीने)

स्थान : सभागृह नंबर 2, ग्लोबल पगोडा परिसर, गोराई, बोरीवली (प), मुंबई. 400091 अधिक जानकारी एवं आवेदन पत्र इस वेब लिंक पर प्राप्त करें |

https://www.vridhamma.org/Pali-Study-Programs; संपर्क: 022-62427560 (सुबह 09:30 से श्याम 05:30); ई-मेल: mumbai@vridhamma.org

अफ्रीका के पूर्वी देशों जैसे इथियोपिया तथा इरिट्रिया में विपश्यना शिविर

इथियोपिया विपश्यना न्यास (पूर्वी अफ्रीका) ने २३ से अधिक १०-दिवसीय शिविर, कुछ ३-दिवसीय शिविर, सतिपट्ठान तथा बच्चों के शिविर आयोजित किये। अभी तीन इथियोपियन सहायक आचार्य तथा दो बाल शिविर शिक्षक हैं। शिविर में भाग लेने वाले साधक या तो व्यापारी या नौकरीपेशा या विश्वविद्यालय के विद्यार्थी हैं। स्थानीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दान-दाताओं की सहायता से कुछ साधकों ने भारत जाकर दीर्घ शिविर भी किया है और आशा की जाती है कि विपश्यना केन्द्र के लिए भूमि मिल सकती है। वे लोग तथा बहुत से पुराने साधक यह सोचने लगे हैं कि पड़ोस के इरिट्रिया में भी शिविर आयोजन करने का समय आ गया है।

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें- arsemitti@yahoo.com or denekewk@gmail.com; यदि चाहें तो इरिट्रिया का या उस क्षेत्र का कोई अन्य पुराना साधक उनसे संपर्क स्थापित करके भविष्य में धर्मप्रसार की संभावनाओं पर विचार कर सकते हैं। धन्यवाद!

Photos from children's courses: http://www.children.dhamma.org/en/children/what-others-say.shtml#Africa

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

1. श्री पुण्डलीक अहिरे, धम्म सरिता विपश्यना केंद्र के केंद्र-आचार्य के सहायक के रूप में सेवा

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री मृत्युंजय शास्त्री, जलगांव
2. श्री हेमलता शास्त्री, जलगांव

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्री चंद्रकांत गनेडीवाला, नागपुर
2. श्रीमती वंदना गवळी, नागपुर
3. श्री धेंडुप डी लामा, सिक्किम

बाल-शिविर शिक्षक

1. श्रीमती भाग्यश्री वाल्वेकर, पुणे
2. श्री रमेश जगताप, मुंबई
3. डॉ श्रीमती मोहिनी गाडे मुंबई
4-5. श्री कृत रंजन एवं श्रीमती प्रांतिका चाकमा, अगरतला, त्रिपुरा
6. श्री स्वर्ण कमल चाकमा, अगरतला, त्रिपुरा
7. श्री तपव्रत चक्रबोर्ती, पश्चिम बर्धन, पश्चिम बंगाल
8. श्री अमल मंडल, कोलकाता, प. बंगाल
9. Mr Piotr Suffezynski Poland

Registered No. NSK/RNP-235/2018-2020

ग्लोबल विपश्यना पगोडा परिचालनार्थ सेंचुरीज कॉर्पस फंड

पूज्य गुरुजी की इच्छा थी कि **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** अगले दो-ढाई हजार वर्षों तक सुचारु रूप से लोगों की धर्मसेवा करता रहे, परंतु यहां आने वालों से कोई शुल्क न लिया जाय, ताकि गरीब-अमीर सभी लोग यहां आसानी से पहुँच सकें और सद्धर्म की जानकारी लेकर धर्मलाभ प्राप्त कर सकें, और इसके दैनिक खर्च को संभालने के लिए एक **'सेंचुरीज कार्पस फंड'** की व्यवस्था की जाय। उनकी इस महान इच्छा को पूर्ण करने के लिए **'ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन'** (GVF) ने हिसाब लगाया कि यदि 8760 लोग, प्रत्येक व्यक्ति रु. 1,42,694/-, एक वर्ष के अंदर जमा कर दें, तो 125 करोड़ रु. हो जायँगे और उसके मासिक ब्याज से यह खर्च पूरा होने लगेगा। कोई एक साथ नहीं जमा कर सके तो किस्तों में भी जमा कर सकते हैं। कुछ लोगों ने पैसे जमा कर दिये हैं और विश्वास है शीघ्र ही यह कार्य पूरा हो जायगा।

संतों की वाणी है कि जब तक भगवान बुद्ध की धातु रहेगी, उनका धर्म भी कायम रहेगा। इस माने में केवल पत्थरों से बना यह धातुगब्भ पगोडा हजारों वर्षों तक बुद्ध-धातुओं को सुरक्षित रखेगा और इसमें ध्यानाभ्यास करने वाले असंख्य प्राणियों को धर्मलाभ मिलेगा। यानी, इसके परिचालन की भारी वित्तीय आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु, साधक तथा असाधक सभी दानियों को सहस्राब्दियों तक अपनी धर्मदान की पारमी बढ़ाने का एक सुखद सुअवसर है। अधिक जानकारी तथा निधि भेजने हेतु **संपर्क:--** 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, A/c. Office: 022-62427512 / 62427510; **Email--** audits@globalpagoda.org; **Bank Details:** 'Global Vipassana Foundation' (GVF), Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments, Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064, Branch - Malad (W). Bank A/c No.- 911010032397802; IFSC No.- UTIB0000062; Swift code: AXISINBB062.

धम्मालय-2 (आवास-गृह) का निर्माण कार्य

पगोडा परिसर में 'एक दिवसीय' महाशिविरों में दूर से आने वाले साधकों तथा धर्मसेवकों के लिए रात्रि-विश्राम की निःशुल्क सुविधा हेतु "धम्मालय-2" आवास-गृह का निर्माण कार्य होगा। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे कृपया उपरोक्त (GVF) के पते पर संपर्क करें।

ग्लोबल पगोडा में सन 2018-19 के महासंघदान और एक-दिवसीय महाशिविर के आयोजन

रविवार 30 सितंबर को **शरद पूर्णिमा** एवं पूज्य गुरुजी की **पुण्य-तिथि** *(29 सितंबर)* तथा **रविवार 13 जनवरी, 2019** को पूज्य माताजी की **पुण्य-तिथि** *(5 जनवरी)* एवं सयाजी ऊ बा खिन की **पुण्य-तिथि** *(19 जनवरी)* के उपलक्ष्य में **पगोडा** परिसर में प्रातः **9:30** बजे **वृहत्संघदानों** का आयोजन किया जा रहा है। उसके बाद 11 बजे से साधक-साधिकाएं **एक दिवसीय महाशिविर** का लाभ ले सकेंगे। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यवर्धक दान-कार्य में भाग लेना चाहते हों, वे कृपया निम्न नाम-पते पर संपर्क करें-1. Mr Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, फोनः 022- 62427512 (9:30AM to 5:30PM), Email: audits@globalpagoda.org

एक दिवसीय महाशिविरः प्रातः 11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक। 3 से 4 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपो सुखो-** सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्क:** 022-28451170, 022-62427544- Extn. no. 9, 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online Regn: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

अहो भाग्य! सद्गुरु मिले, कैसे संत सुजान!
मार्ग दिखाया मुक्ति का, शुद्ध जगाया ज्ञान।।

सद्गुरु की संगत मिली, जागा पुण्य अनंत।
सत्य धर्म का पथ मिला, करे पाप का अंत।।

सद्गुरु की करुणा जगी, दिया धर्म का सार।
संप्रदाय के बोझ का, उतरा सिर से भार।।

धन्य! धन्य! गुरुवर मिले, ऐसे संत सुजान।
छूटी मिथ्या कल्पना, छूटा मिथ्या ज्ञान।।

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

बिन सतगुरु मिलतो नहीं, पावन धरम प्रकास।
मोह निसा कटती नहीं, ना कटता भवपास।।

जदि सतगुरु देतो नहीं, सत्य धरम परकास।
तो अंतर मँह रैवतो, अंधकार रो बास।।

सतगुरु री संगत मिली, मिल्यो सत्य रो सार।
जीवन सफळ बणा लियो, हिय रो उतर्यो भार।।

सतगुरु री करुणा जगी, दियो धरम रो सार।
संप्रदाय री पोट रो, दीन्यो बोझ उतार।।

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2562, स्रावण पूर्णिमा, 26 अगस्त, 2018

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2018-2020

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 15 AUGUST, 2018, DATE OF PUBLICATION: 26 AUGUST, 2018

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 244144,
244440. फैक्स : (02553) 244176
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org